(5) द्विकर्मक धातुओं के कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य – द्विकर्मक धातुएँ कुल 16 होती हैं – दुह, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, हु, कृष्, वह्। कर्मवाच्य बनाते समय गौण (अप्रधान) कर्म में प्रथमा तथा मुख्य कर्म में द्वितीया ही होती है। कर्ता तो तृतीया में ही होता है तथा क्रिया गौण कर्म के अनुसार होती है, जैसे –

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1. गोपः गां दुग्धं दोग्धि । (ग्वाला गाय से दूध दुहता है ।)	गोपेन **गौः** दुग्धं दुह्यते । (ग्वाला द्वारा गाय का दूध दुहा जाता है ।)
2. हरिः बलिं वसुधां याचते । (हरि बलि से पृथ्वी की याचना करते हैं ।)	हरिणा **बलिः** वसुधां याच्यते । (हरि द्वारा बलि से पृथ्वी की याचना की जाती है ।)
3. माता तण्डुलान् ओदनं पचति । (माँ चावलों से भात पकाती है ।)	मात्रा **तण्डुलाः** ओदनं पच्यन्ते । (माँ द्वारा चावलों से भात पकाया जाता है ।)
4. नृपः अपराधिनं शतं दण्डयति । (राजा अपराधी पर सौ रुपये का दण्ड करता है ।)	नृपेण **अपराधी** शतं दण्ड्यते । (राजा द्वारा अपराधी पर सौ रुपये का दण्ड किया जाता है।)
5. कृषकः व्रजं पशून् अवरुणद्धि । (किसान गौशाला में (बाड़े में) पशुओं को रोकता है ।	कृषकेण **व्रजः** पशून् अवरुध्यते । (किसान द्वारा गौशाला में (बाड़े में) पशुओं को रोका जाता है ।)
6. बालकः पितरं प्रश्नं पृच्छति । (बालक पिता से प्रश्न पूछता है ।)	बालकेन **पिता** प्रश्नं पृच्छ्यते । (बालक द्वारा पिता से प्रश्न पूछा जाता है ।)
7. मालाकारः उद्यानं पुष्पाणि चिनोति । (माली वाटिका से फूलों को चुनता है ।)	मालाकारेण **उद्यानं** पुष्पाणि चीयते । (माली द्वारा वाटिका से फूलों को चुना जाता है ।)
8. आचार्यः शिष्यं धर्मं ब्रूते । (आचार्य शिष्य को धर्म बोलता है ।)	आचार्येण **शिष्यः** धर्मम् उच्यते । (आचार्य द्वारा शिष्य को धर्म बोला जाता है ।)
9. गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति । (गुरु शिष्य को धर्म सिखाता है।)	गुरुणा **शिष्यः** धर्मं शास्यते । (गुरु द्वारा शिष्य को धर्म सिखाया जाता है ।)
10. रामदत्तः ब्रह्मदत्तं शतं जयति । (रामदत्त ब्रह्मदत्त से सौ रुपये जीतता है ।)	रामदत्तेन **ब्रह्मदत्तः** शतं जीयते । (रामदत्त द्वारा ब्रह्मदत्त से सौ रुपयों को जीता जाता है ।

Scanned with CamScanner

(4) भाववाच्य से कर्तृवाच्य – कर्ता जो तृतीया विभक्ति में होता है उसे प्रथमा विभक्ति में परिवर्तित करके कर्ता के पुरुष एवं वचन के अनुसार क्रिया लगायी जाती है। जैसे –

भाववाच्य	कर्तृवाच्य
1. मात्रा सुप्यते । (माता द्वारा सोया जाता है ।)	माता स्वपिति । (माता सोती है ।)
2. तेन रुद्यते । (उसके द्वारा रोया जाता है ।)	सः रोदिति । (वह रोता है ।)
3. मुनिना तप्यते । (मुनि द्वारा तप किया जाता है ।)	मुनिः तपति । (मुनि तप करता है ।)
4. मया हस्यते । (मेरे द्वारा हँसा जाता है ।)	अहं हसामि । (मैं हँसता हूँ ।)
5. श्रीमता आस्यते । (श्रीमान् द्वारा बैठा जाता है ।)	श्रीमान् आस्ते । (श्रीमान् बैठते हैं ।)
6. त्वया कर्तुं शक्यते (तुम्हारे द्वारा किया जा सकता है ।)	त्वं कर्तुं शक्नोषि । (तुम कर सकते हो ।
7. तैः स्थीयते । (उनके द्वारा बैठा जाता है ।)	ते तिष्ठन्ति । (वे बैठते हैं ।)
8. मया चिन्त्यते । (मेरे द्वारा सोचा जाता है ।)	अहं चिन्तयामि । (मैं सोचता हूँ ।)
9. तेन भूयते । (उसके द्वारा हुआ जाता है ।)	सः भवति । (वह होता है ।)
10. रामेण उष्यते । (राम द्वारा रहा जाता है ।)	रामः वसति । (राम रहता है ।

Scanned with CamScanner

(2) कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य – कर्ता प्रथमा विभक्ति में तथा कर्म को द्वितीया विभक्ति में करके कर्ता के अनुसार क्रिया लगायी जाती है।

	कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
1.	अस्माभिः गीतं गीयते । (हमारे द्वारा गीत गाया जाता है ।)	वयं गीतं गायामः । (हम गीत गाते हैं ।)
2.	तेन दुग्धं पीयते । (उसके द्वारा दूध पिया जाता है ।)	स दुग्धं पिबति । (वह दूध पीता है ।)
3.	रामेण रावणः हन्यते । (राम द्वारा रावण मारा जाता है ।)	रामः रावणं हन्ति । (राम रावण को मारता है ।)
4.	आवाभ्याम् विद्यालयः गम्यते । (हम दोनों द्वारा विद्यालय जाया जाता है ।)	आवां विद्यालयं गच्छावः । (हम दोनों विद्यालय जाते हैं ।)
5.	मया त्वं ताड्यसे । (मेरे द्वारा तुम पीटे जाते हो ।)	अहं त्वां ताडयामि । (मैं तुम्हें पीटता हूँ ।)
6.	पुत्रेण पिता सेव्यते । (पुत्र द्वारा पिता की सेवा की जाती है ।)	पुत्रः पितरं सेवते । (पुत्र पिता की सेवा करता है ।)
7.	ईश्वरेण सर्वे रक्ष्यन्ते । (ईश्वर द्वारा सबकी रक्षा की जाती है ।)	ईश्वरः सर्वान् रक्षति । (ईश्वर सबकी रक्षा करता है ।)
8.	सर्वैः ईश्वरः पूज्यते । (सभी द्वारा ईश्वर पूजा जाता है ।)	सर्वे ईश्वरं पूजयन्ति । (सभी ईश्वर को पूजते हैं।
9.	त्वया कन्दुकेन क्रीड्यते । (तुम्हारे द्वारा गेंद से खेला जाता है ।)	त्वं कन्दुकेन क्रीडसि । (तुम गेंद से खेलते हो ।)
10.	रावणेन सीता अपह्रियते । (रावण द्वारा सीता का अपहरण किया जाता है ।)	रावणः सीताम् अपहरति । (रावण सीता का अपहरण करता है ।)

(3) कर्तृवाच्य से भाववाच्य – कर्ता को तृतीया विभक्ति में परिवर्तित करके क्रिया प्रथम पुरुष एकवचन की कर्मवाच्य की जैसी आत्मनेपदी रूप में लगायी जाती है ।

	कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1.	बालिका हसति । (लड़की हँसती है ।)	बालिकया हस्यते । (लड़की द्वारा हँसा जाता है ।)
2.	शिशुः रोदिति । (बच्चा रोता है ।)	शिशुना रुद्यते । (बच्चे द्वारा रोया जाता है ।)
3.	आवां क्रीडावः । (हम दोनों खेलते हैं ।)	आवाभ्यां क्रीड्यते । (हम दोनों द्वारा खेला जाता है ।
4.	वयम् हसामः । (हम हँसते हैं ।)	अस्माभिः हस्यते । (हमारे द्वारा हँसा जाता है ।)
5.	अश्वाः धावन्ति । (घोड़े दौड़ते हैं ।)	अश्वैः धाव्यते । (घोड़ों द्वारा दौड़ा जाता है ।)
6.	मनुष्याः तिष्ठन्ति । (मनुष्य बैठते हैं ।)	मनुष्यैः स्थीयते । (मनुष्यों द्वारा बैठा जाता है ।)
7.	पीडिताः क्रन्दन्ति । (पीड़ित क्रन्दन करते हैं ।)	पीडितैः क्रन्द्यते । (पीड़ितों द्वारा चीखा जाता है ।
8.	रामः चिन्तयति । (राम सोचता है ।)	रामेण चिन्त्यते । (राम के द्वारा सोचा जाता है ।)
9.	अहं स्वपिमि । (मैं सोता हूँ ।)	मया सुप्यते । (मेरे द्वारा सोया जाता है ।)
10.	शिशुः शेते । (बच्चा सोता है ।)	शिशुना शय्यते । (बच्चे द्वारा सोया जाता है ।)

Scanned with CamScanner

(1) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य – कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन करते समय वाक्य के कर्ता को तृतीया विभक्ति में, कर्म को प्रथमा में परिवर्तित करके क्रिया को कर्म के अनुसार बनाया जाता है ।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1. त्वं ग्रन्थं पठसि । (तू ग्रन्थ पढ़ता है ।)	त्वया ग्रन्थः पठ्यते । (तुम्हारे द्वारा ग्रन्थ पढ़ा जाता है ।)
2. अहं त्वां पश्यामि । (मैं तुझे देखता हूँ ।)	त्वं मया दृश्यसे । (तुम्हारे द्वारा मैं देखा जाता हूँ ।)
3. सः मां पश्यति । (वह मुझे देखता है ।)	तेन अहं दृश्ये । (उसके द्वारा मैं देखा जाता हूँ ।)
4. वयं तान् पश्यामः । (हम उन्हें देखते हैं ।)	अस्माभिः ते दृश्यन्ते । (हमारे द्वारा वे देखे जाते हैं ।)
5. मृगयुः व्याघ्रं हन्ति । (शिकारी बाघ को मारता है ।)	मृगयुना व्याघ्रः हन्यते । (शिकारी द्वारा बाघ मारा जाता है ।)
6. अहं गृहं गच्छामि । (मैं घर को जाता हूँ ।)	मया गृहं गम्यते । (मेरे द्वारा घर जाया जाता है ।)
7. चञ्चलः बालकः स्वकीयं पाठं पठति । (चंचल बालक अपना पाठ याद करता है ।)	चञ्चलेन बालकेन स्वकीयः पाठः पठ्यते । (चंचल बालक द्वारा अपना पाठ पढ़ा जाता है ।)
8. जनाः कथां शृण्वन्ति । (लोग कथा सुनते हैं ।)	जनैः कथा श्रूयते । (लोगों द्वारा कथा सुनी जाती है ।)
9. बालक. वृक्षान् सिञ्चन्ति (बालक वृक्षों को सींचता है ।)	बालकेन वृक्षाः सिञ्च्यन्ते । (बालक द्वारा वृक्ष सींचे जाते हैं ।)
10. बालका· फलानि खादन्ति । (बालक फल खाते हैं ।)	बालकैः फलानि खाद्यन्ते । (बालकों द्वारा फल खाये जाते हैं ।)

Scanned with CamScanner

युध्	युद्ध करना	युध्यते	हन्	मारना	हन्यते
हृ	हरना	ह्रियते	दुह्	दूध दोहना	दुह्यते
शक्	सकना	शक्यते	भक्ष्	खाना	भक्ष्यते
स्वप्	सोना	स्वप्यते	क्रीड्	खेलना	क्रीड्यते
नृत्	नाचना	नृत्यते	लिख्	लिखना	लिख्यते
पूज्	पूजना	पूज्यते	तन्	तानना	तन्यते
गण्	गिनना	गण्यते	रुध्	रोकना	रुध्यते
धृ	धारण करना	धार्यते	अद्	खाना	अद्यते
भी	डरना	भीयते	वञ्च्	ठगना	वञ्च्यते
याच्	माँगना	याच्यते	जीव्	जीना	जीव्यते
ब्रू	बोलना	उच्यते	अर्च	पूजा करना	अर्च्यते
स्तु	स्तुति करना	स्तूयते	इष्	चाहना	इष्यते
ईर्ष्य	ईर्ष्या करना	ईर्ष्यते	ईक्ष्	देखना	ईक्ष्यते
कूर्द्	कूदना	कूर्द्यते	कुप्	क्रुद्ध होना	कुप्यते
रक्ष्	रक्षा करना	रक्ष्यते	कृष्	खींचना	कृष्यते
क्लिश्	दु:खी होना	क्लिश्यते	क्रन्द्	चिल्लाना	क्रन्द्यते
क्षिप्	फेंकना	क्षिप्यते	क्षम्	क्षमा करना	क्षम्यते
ग्रस्	निगलना	ग्रस्यते	चिन्त्	सोचना	चिन्त्यते
चूष्	चूसना	चूष्यते	चुर्	चुराना	चोर्यते
ध्वन्	शब्द करना	ध्वन्यते	त्यज्	छोड़ना	त्यज्यते
नश्	नष्ट होना	नश्यते	नम्	झुकना	नम्यते
पीड्	सताना	पीड्यते	निन्द्	निन्दा करना	निन्द्यते
			भाष्	बोलना	भाष्यते

वाच्य-परिवर्तनस्य अन्यानि उदारणानि (वाच्य-परिवर्तन के कुछ अन्य उदाहरण)

(1) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य – कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन करते समय वाक्य के कर्ता को तृतीया विभक्ति में, कर्म को प्रथमा में परिवर्तित करके क्रिया को कर्म के अनुसार बनाया जाता है ।

CS Scanned with

लट्लकारः

धातवः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
बुध्	बुध्यते	बुध्येते	बुध्यन्ते
गम्	गम्यते	गम्येते	गम्यन्ते
कृ	क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते
लभ्	लभ्यते	लभ्येते	लभ्यन्ते
दा	दीयते	दीयेते	दीयन्ते
पा	पीयते	पीयेते	पीयन्ते
गै-गा	गीयते	गीयेते	गीयन्ते
नी	नीयते	नीयेते	नीयन्ते
श्रु	श्रूयते	श्रूयेते	श्रूयन्ते
स्मृ	स्मर्यते	स्मर्येते	स्मर्यन्ते
भू	भूयते	भूयेते	भूयन्ते
स्था	स्थीयते	स्थीयेते	स्थीयन्ते
आस् (सीद्)	आस्यते	आस्येते	आस्यन्ते
हस्	हस्यते	हस्येते	हस्यन्ते
शीङ्	शय्यते	शय्येते	शय्यन्ते

भाववाच्ये क्रिया प्रथमपुरुषैकवचने एव प्रयुज्यते। (भाववाच्य में क्रिया प्रथम पुरुष एकवचन में ही प्रयुक्त की जाती है।)

अन्य धातून उदाहरणानि

कर्मवाच्य और भाववाच्य के रूप

धातु	अर्थ	कर्म एवं भाववाच्य का रूप	धातु	अर्थ	कर्म एवं भाववाच्य का रूप
कथ्	कहना	कथ्यते	भिद्	भेदना	भिद्यते
ग्रह्	लेना	गृह्यते	विद्	जानना	विद्यते
जन्	पैदा होना	जन्यते	आप्	प्राप्त करना	आप्यते
पच्	पकाना	पच्यते	आस्	बैठना	आस्यते
खन्	खोदना	खन्यते	खाद्	खाना	खाद्यते

Scanned with CamScanner

9. धातु के अन्तिम ऋ का ईर् हो जाता है । जैसे
वि + दृ = विदीर्यते, निगृ = निगीर्यते, उद् + तृ = उत्तीर्यते, जृ – जीर्यते, शृ – शीर्यते ।

10. दीर्घ ई, ऊ अन्त वाली तथा सामान्य हलन्त धातुओं से सीधा 'य' जोड़कर आत्मनेपद में रूप चलाये जाते हैं ।
जैसे- नी – नीयते, भू – भूयते, क्रीड् -क्रीड्यते, पच् – पच्य आदि ।
कर्मवाच्य की धातुओं के रूप तीनों पुरुषों में तीनों वचनों में चलते हैं । जैसे –

कर्मवाच्य में प्रयुक्त पद् धातु (लट् लकार)

पुरुष/वचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पद्यते	पद्येते	पद्यन्ते
मध्यम पुरुष	पद्यसे	पद्येथे	पद्यध्वे
उत्तम पुरुष	पद्ये	पद्यावहे	पद्यामहे

लेट्लकारे कतिपय धातूनां कर्मवाच्यरूपाणि (प्रथम पुरुषे) अत्र प्रस्तूयन्ते । अन्य धातूनां रूपाणि अनेन प्रकारेण निर्मातुं शक्यते । (लट् लकार में कुछ धातुओं के कर्मवाच्य रूप (प्रथम पुरुष में) यहाँ पस्तुत किये जा रहे हैं। अन्य धातुओं वे रूप इसी प्रकार से बनाये जा सकते हैं।)

Scanned with CamScanner

5. प्रच्छ एवं ग्रह आदि धातुओं के र का ऋ हो जाता है । जै
– प्रच्छ – पृच्छ्यते, ग्रह – गृह्यते आदि ।

6. धातु के अन्तिम इ, उ का दीर्घ हो जाता है । जैसे –
ई-ईयते , चि-चीयते, जि-जीयते, नी-नीयते, क्री-क्रीयते, श्रु-
श्रूयते हु – हूयते, दु – दूयते आदि ।

7. आकारान्त धातुओं के 'आ' का ई हो जाता है । जैसे – |
दा – दीयते, पा-पीयते, स्था-स्थीयते, हा-हीयते, विधा-
विधीयते, मा-मीयते आदि । परन्तु कुछ आकारान्त
धातुओं के 'आ' का परिवर्तन नहीं होता । जैसे – घ्रा-घ्रायते,
ज्ञा-ज्ञायते आदि ।।

8. उपधा के अनुस्वार (ं) या उससे बने पञ्चम वर्ण का लोप
हो जाता है । जैसे –
बन्ध् – बध्यते, रञ्ज – रज्यते, मन्थ्-मथ्यते, ग्रन्थ्-ग्रथ्यते,
प्रशंस् – प्रशस्यते, दंश् – दश्यते, परन्तु शङ्क, वञ्च आदि
में ऐसा नहीं होता ।।

CamScanner

कर्मवाच्य एवं भाववाच्य की क्रिया

कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में सभी प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग किया जा सकता है, परन्तु धातु चाहे परस्मैपदी हो या अत्मनेपदी, दोनों का प्रयोग आत्मनेपद में ही होता है। कर्म एवं भाववाच्य की क्रिया बनाने के नियम इस प्रकार हैं –

1. मूल धातु के बाद 'य' लगाया जाता है। जैसे – पठ् -पठ्य लिख्-लिख्य, गम्-गम्य, सेव्-सेव्य, लभ्-लभ्य आदि।
2. इन दोनों प्रकार की धातुओं के रूप आत्मनेपद में ही चलाये जाते हैं, जैसे

पठ् – पठ्यते, पठ्येते, पठ्यन्ते। (परस्मैपद) सेव् – सेव्यते, सेव्येते, सेव्यन्ते। (आत्मनेपद)

3. ऋकारान्त धातुओं के अन्तिम ऋ का प्रायः 'रि' हो जाता है, जैसे – कृ-क्रियते, मृ-म्रियते आदि परन्तु स्मृ, जाग्र आदि कुछ धातुएँ इसका अपवाद हैं। इनके ऋ का अर् होत है। जैसे – स्मृ-स्मर्यते, जागृ-जागर्यते आदि।

4. धातु के आरम्भ के य, व का प्राय: क्रमशः इ, उ हो जाता है। जैसे –

यज् – इज्यते, वच् – उच्यते, वष् – उष्यते, वप् – उप्यते, वह् – उह्यते, वद् – उद्यते।

Scanned with CamScanner

वाच्य-परिवर्तन की विधि

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन करने के लिए वाक्य में कर्ता का तृतीया विभक्ति में तथा कर्म को प्रथमा विभक्ति में परिवर्तन करके कर्म के पुरुष एवं वचन के अनुसार कर्मवाच्य की क्रिया लगाते हैं ।
जैसे – (i) रामः पाठं पठति । (राम पाठ पढ़ता है ।) –
कर्तृवाच्य (क्रिया सकर्मक)
रामेण पाठः पठ्यते । (राम द्वारा पाठ पढ़ा जाता है ।) –
कर्मवाच्य

इसी प्रकार से कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाने के लिए भी कत को तृतीया में परिवर्तित करके क्रिया को प्रथम पुरुष एकवचन (आत्मनेपद) में लगाते हैं । जैसे –
(i) बालकः हसति । (कर्तृवाच्य) – क्रिया अकर्मक
बालकेन हस्यते । (भाववाच्य)

(ii) वयं हसामः । (कर्तृवाच्य) – क्रिया अकर्मक
अस्माभिः हस्यते । (भाववाच्य)

Scanned with CamScanner

कर्तृवाच्यम्	कर्मवाच्यम्
भवान्:/स: पठति। (आप/वह पढ़ता है)	भवता/तेन पठ्यते। (आपके/उसके द्वारा पढ़ा जाता है।)
भवन्तौ/तौ पठत:।	भवद्भ्याम्/ताभ्यां पठ्यते।
(आप दोनों/वे दोनों पढ़ते हैं।)	(आप दोनों/उन दोनों के द्वारा पढ़ा जाता है।)
भवन्त:/ते पठन्ति। (आप सब/वे सब पढ़ते हैं।)	भवद्भि:/तै: पठ्यते। (आप सब/उन सबके द्वारा पढ़ा जाता है।)
भवती/सा पठति। (आप/वह पढ़ती है।)	भवत्या/तया पठ्यते। (आप/उसके द्वारा पढ़ा जाता है।) (स्त्रीलिङ्ग)
भवत्यौ/ते पठत:। (आप दोनों/वे दोनों पढ़ती हैं।)	भवतीभ्याम्/ताभ्याम् पठ्यते। (आप दोनों/ दोनों के द्वारा पढ़ा जाता है।
भवत्य:/ता: पठन्ति। (आप सब/वे सब पढ़ती हैं।)	भवतीभि:/ताभि: पठ्यते। (आप सब/उन सब के द्वारा पढ़ा जाता है।
त्वं पठसि। (तुम पढ़ते/पढ़ती हो)	त्वया पठ्यते। (तुम्हारे द्वारा पढ़ा जाता है।)
युवाम् पठथ:। (तुम दोनों पढ़ते/पढ़ती हो।)	युवाभ्याम् पठ्यते। (तुम दोनों के द्वारा पढ़ा जाता है।)
यूयम् पठथ:। (तुम सब पढ़ते/पढ़ती हो।)	युष्माभि: पठ्यते। (तुम सबके द्वारा पढ़ा जाता है।)
अहं पठामि। (मैं पढ़ता/पढ़ती हूँ।)	मया पठ्यते। (मेरे द्वारा पढ़ा जाता है।)
आवाम् पठाव:। (हम दोनों पढ़ते/पढ़ती हैं।)	आवाभ्याम् पठ्यते। (हम दोनों के द्वारा पढ़ा जाता है।)
वयम् पठाम:। (हम सब पढ़ते/पढ़ती हैं।)	अस्माभि: पठ्यते। (हम सबके द्वारा पढ़ा जाता है।)
एष:/अयं बालक: पठति। (यह बालक पढ़ता है।)	एतेन/अनेन बालकेन पठ्यते। (इस बालक के द्वारा पढ़ा जाता है।)
एषा/इयं बालिका पठति। (यह बालिका पढ़ती है।)	एतया/अनया बालिकया पठ्यते। (इस बालिका के द्वारा पढ़ा जाता है।)
ऐतौ/इमौ बालकौ पठत:।	एताभ्यां/आभ्यां बालकाभ्यां पठ्यते।
(ये दोनों बालक पढ़ते हैं।)	(इन दोनों बालकों के द्वारा पढ़ा जाता है।)
एते/इमे बालिके पठत:।	एताभ्यां/आभ्यां बालिकाभ्यां पठ्यते।
(ये दोनों बालिकायें पढ़ती हैं।)	(इन दोनों बालिकाओं द्वारा पढ़ा जाता है।)
एते/ इमे बालका: पठन्ति।	एतै:/एभि: बालकै: पठ्यते। (इन सब बालकों द्वारा पढ़ा जाता है।)
(ये सब बालक पढ़ते हैं।)	
एते/इमे बालिका: पठन्ति।	एताभि:/आभि: बालिकाभ: पठ्यते।
(ये सब बालिकायें पढ़ती हैं।)	(इन सब बालिकाओं द्वारा पढ़ा जाता है।)
अहं श्लोकं पठामि। (मैं श्लोक पढ़ता हूँ।)	मया श्लोक: पठ्यते। (श्लोक मेरे द्वारा पढ़ा जाता है।)
अहं श्लोकौ पठामि। (मैं दो श्लोक पढ़ता हूँ।)	मया श्लोकौ पठ्येते। (मेरे द्वारा दो श्लोक पढ़े जाते हैं।)
अहं श्लोकान् पठामि। (मैं श्लोकों को पढ़ता हूँ।)	मया श्लोका: पठ्यते। (श्लोक मेरे द्वारा पढ़े जाते हैं।)
अहं पुस्तकं पठामि। (मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।)	मया पुस्तकं पठ्यते। (पुस्तक मेरे द्वारा पढ़ी जाती है।)
अहं पुस्तके पठामि। (मैं दो पुस्तक पढ़ता हूँ।)	मया पुस्तके पठ्येते। (मेरे द्वारा दो पुस्तकें पढ़ी जाती हैं।)
अहं पुस्तकानि पठामि (मैं पुस्तकों को पढ़ता हूँ।)	मया पुस्तकानि पठ्यन्ते। (पुस्तकें मेरे द्वारा पढ़ी जाती हैं।)
अहं कथां पठामि। (मैं कथा पढ़ता हूँ।)	मया कथा पठ्यते। (कथा मेरे द्वारा पढ़ी जाती है।)
अहं कथे पठामि। (मैं दो कथा पढ़ता हूँ।)	मया कथे पठ्येते। (दो कथा मेरे द्वारा पढ़ी जाती हैं।)
अहं कथा: पठामि। (मैं कथाओं को पढ़ता हूँ।)	मया कथा: पठ्यन्ते। (कथाएँ मेरे द्वारा पढ़ी जाती हैं।)